लक्ष्मी को प्रिय है "दक्षिणावर्ती शंख"

भारतीय संस्कृति और धर्म में शंख का बड़ा महत्त्व है। विष्णु के चार आयुधों में शंख को भी एक स्थान मिला है। मन्दिरों में आरती के समय शंखध्वनि का विधान है तथा प्रत्येक तान्त्रिक पूजा में शंख के द्वारा अभिषेक का महात्म्य है। विवाह तथा शवयात्रा, युद्ध एवं अन्य पुण्यकर्मों के आरम्भ में भी शंखध्वनि को पवित्र माना गया है। मूलतः भारत में जितने भी शंख पाये जाते हैं वे वामवर्त शंख होते हैं परंतु यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि बहुत कम शंख दक्षिणावर्त होते हैं, ऐसे शंख ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण माने जाते हैं। हजारों-लाखों शंखों में से एक दो शंख दक्षिणावर्त होते हैं। अथर्ववेद के चौथे काण्ड में 10वां सूक्त 'शंखमणि सूक्त' के नाम से प्रसिद्ध है। इस सूक्त के ऋषि अथर्वा तथा देवता शंखमणि हैं। सूक्त के 7 मंत्रों में कहा गया है कि-

यह शंख अन्तरिक्ष, वायु, ज्योर्तिमण्डल एवं सुवर्ण से उपलब्ध है। इसकी ध्वनि शत्रुओं को निर्बल करने वाली है। यह हमारा रक्षक है। समुद्र से उत्पन्न यह शंख राक्षसों और पिशाचों को वशीभूत करने वाला, रोग, अज्ञान एवं अलक्ष्मी को दूर भगाने वाला तथा आयु का वर्द्धक है। यह चन्द्रमा के अमृतमण्डल से उत्पन्न है। इसे रथी और वीर लोग धारण करते हैं। अन्य ग्रन्थों में कहा गया है कि-

शंख चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गंगा सरस्वतीम्।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शंख प्रपूजयेत्।।
दर्शनेन हि शंखस्य किं पुनः स्पर्शनेन तु।
विलयं यान्ति पापानि हिमवद् भास्करोदये।।

अर्थात् शंख चन्द्र और सूर्य के समान देवस्वरूप हैं। इसके मध्य में वरुण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा और अग्रभाग में गंगानदी का निवास है। तीनों लोक में जितने भी तीर्थ हैं। अतः हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! शंख की पूजा करनी चाहिए। शंख के दर्शन मात्र से सभी पाप ऐसे नष्ट हो जाते हैं कि जैसे सूर्योदय होने पर बर्फ पिघल जाता है। फिर स्पर्श की तो बात ही क्या?

"दक्षिणावर्तशंखोयं यस्य सद्मनि तिष्ठति।
मंगलानि प्रवर्तन्ते तस्य लक्ष्मीः स्वयं स्थिरा।।
काञ्चनीं मेखलां कृत्वा शुचिस्थाने निधापयेत्।
शुचिस्तं पूजयेन्नित्यं कुसुमैश्चन्दनैस्तथा।।
दुग्धेन स्थापनीयोऽयं नैवेद्येस्तोषयेत् सदा।
दक्षिणावर्त शंखोऽयं सर्वलक्ष्मीफलप्रदः।।"

अर्थात "यह दक्षिणावर्त शंख जिसके घर में रहता है वहाँ मंगल ही मंगल होते हैं, लक्ष्मी स्वयं स्थिर निवास करती हैं। सोने की मेखला बना कर इसे पवित्र स्थान में रखे और पवित्रतापूर्वक नित्य पुष्प, चन्दन आदि से पूजा करे। इसमें दूध भरकर रखना चाहिए तथा नैवेद्य चढ़ा कर उसे प्रसन्न करें। ऐसा करने से सर्वविध लक्ष्मी प्राप्त होगी।"

चन्दनागुरुकर्पूरैः पूजयेद् यो गृहेऽन्वहम्।
स सौभाग्ये कृष्णसमो धने स्याद् धनदोपमः।।

शंख उत्पत्ति-

शंख की उत्पत्ति के बारे में 'ब्रह्मवैवर्त-पुराण' के प्रकृति खण्ड के 18वें अध्याय में एक आख्यान है। वहां कहा गया है कि- "भगवान् शंकर तथा शंखचूड राक्षस में परस्पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में शिवजी ने भगवान् विष्णु से त्रिशूल प्राप्त करके उसके द्वारा शंखचूड का वध किया और उसके अस्थि पञ्जर को समुद्र में डाल दिया। वही आगे शंख के रूप में उत्पन्न हुआ। इसीलिये शंख में रखा हुआ जल तीर्थजल गंगाजल के समान पवित्र होता है और यह देवताओं को अतिप्रिय है।" समुद्र मंथन से निकले हुए 14 रत्नों में शंख भी निकला था, इसलिये इसे भी रत्न की श्रेणी में रखा गया है। नौ निधियों में इस शंख को भी एक निधि के रूप में माना गया है।

शंख के प्रमुख भेद-

शंख के मुख्यतः दो प्रकार हैं एक- दक्षिणावर्त और दूसरा वामावर्त। इसमें दक्षिण की ओर जिसका पर्दा खुला होता है, उसे दक्षिणावर्त तथा बाई ओर जिसका पर्दा खुला हो उसे वामावर्त कहते हैं। दक्षिणावर्त शंख सर्वत्र सुलभ नहीं होते हैं और इनका मूल्य भी अधिक होता है, जबकि वामावर्त सर्वत्र प्राप्त होते हैं। दक्षिणावर्त शंख के दो भेद हैं 1.पुरुष शंख तथा 2.स्त्री शंखिनी। इनमें जो मोटी परतवाला भारी होता है उसे पुरुष शंख कहते हैं तथा पतली परत तथा हलके वजन वाले को स्त्री शंखिनी कहते हैं।

दक्षिणावर्त शंख ही लक्ष्मी का रूप माना गया है। यदि ऐसा शंख मंत्र सिद्ध न भी हो फिर भी वह घर में होता है तो जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

दक्षिणावर्त शंख का प्रयोग दीपावली पर होता है। साधक को चाहिए कि दीपावली से पहले ही वह दक्षिणावर्त शंख प्राप्त कर लें। दीपावली की रात्रि को साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पश्चिम की तरफ मुंह कर आसन पर बैठ जाए और सामने चांदी या कांसी की थाली में कुंकुम से अष्ट

दल बनाकर उस पर दक्षिणावर्त शंख रख दें। इस शंख का मुंह साधक की तरफ होना चाहिए।

इसके बाद उसे जल से स्नान करावें, फिर पंचामृत से स्नान करावें और उसके बाद पुनः जल से स्नान कराकर सफेद वस्त्र से पौंछ लें। यदि संभव हो तो इस प्रकार के शंख को सोने में मंढ़ा लेना चाहिए। इसके बाद इस शंख की अक्षत पुष्प आदि से पूजा करें और सामने अगरबत्ती व दीपक रखें।

फिर शंख पर गुलाल एवं इत्र लगावें और उसके सामने नैवेद्य आदि रखें। यह नैवेद्य रखते समय निम्न मंत्र का बराबर उच्चारण करते रहें-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय श्रीदक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र से शंख का ध्यान करें-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तितार्थ संपादकाय श्री दक्षिणावर्तशंखाय श्रीकराय पूज्याय क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ नमः सर्वाभरणभूषिताय प्रशस्यांगौंपांगसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनुचिन्तामणिनदनिधि रूपाय चतुर्दशनवरत्न परिवृताय अष्टादशमहासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मीदेवता श्रीकृष्णदेवकरतललालिताय श्रीशंखमहानिधये नमः।

इस प्रकार ध्यान करने के बाद साधक को चाहिए कि वह निम्नलिखित मूल मंत्र की 125 मालाएं फेरे पर रात्रि को आसन बदले नहीं और न बीच में से उठे।

मूल मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः।

प्रातःकाल उठकर इस शंख को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें या किसी सुरक्षित स्थान में रख दें।

वस्तुतः जो भाग्यशाली होते हैं, जिनके जीवन में भाग्योदय होता है, उन्हीं के घर में इस प्रकार का दक्षिणावर्त शंख पाया जाता है।

दक्षिणावर्ती शंख के प्रभाव-

- इस प्रकार के शंख में जल भर कर मस्तक पर रोज छोड़ने से पाप नाश होता है।
- शंख में जल भर कर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।
- पूजन के बाद शंख में दूध भरकर यदि बांझ स्त्री पिये तो उसके निश्चय ही संतान होती है।
- यदि इस प्रकार का शंख घर में होता है तो किसी प्रकार का रोग या संकट घर में नहीं व्याप्त होता।
- यदि इस शंख के सामने नित्य अगरबत्ती लगाई जाय तो उस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य में सम्मान होता है तथा व्यापार में वृद्धि होती है।
- जिसके घर में शंख होता है, उसके घर में अक्षय भंडार बना रहता है।
- यदि इस शंख में पानी भरकर 'अमुकं वशमानाय स्वाहा' मंत्र का 21 बार उच्चारण कर वह जल उस पर डाल दें तो वह निश्चय ही वश में होता है, इस मंत्र में अमुक के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसको अपने वश में करना है। वस्तुतः ये कल्प अत्यंत ही गोपनीय एवं महत्वपूर्ण रहे हैं। कुछ सौभाग्यशाली ही ऐसे होते हैं जिनके घर में इस प्रकार के पांचों कल्प सिद्ध किये हुए पाये जाते हैं। प्रत्येक भारतीय के घर में ऐसे कल्प होने से अनुकूलता रहती ही है। यदि साधक इस प्रकार के कल्प सिद्ध न कर सके तो किसी योग्य विद्वान् से शंख प्राप्त करें।

दक्षिणा न्यौछावर 2500 से आरम्भ

♦♦♦

कालसर्प योग

एक महाविनाशकारी पीड़ादायक योग

कालसर्प योग एक भयानक पीड़ादायक योग है जो व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है। उस व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव बना ही रहता है। चाहे वह व्यक्ति पूर्ण प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू हो अथवा विश्व में बेहद चर्चित बिगबुल हर्षद मेहता। इस योग ने सभी को कष्ट दिया है। कालसर्प योग को लेकर जन सामान्य में अनेक भ्रांतिया हैं। इस योग की शान्ति के लिये आये दिन धूर्त ज्योतिषियों द्वारा कई प्रकार से पैसा ठगने की बात सामने आती है जबकि उस जातक को कालसर्प योग होता ही नहीं है। अतः सावचेत रहें। अगर आप वाकई कालसर्प योग के प्रभाव में हैं तो समय पर कालसर्प योग की शान्ति के लिये इन प्रामाणिक उपायों का सहारा लें।

कालसर्प दोष शान्ति हेतु विशेष सामग्री–1.सम्पूर्ण कालसर्प यंत्र 2.कालसर्प यंत्र 3.कालसर्प यंत्र पैंडल 4.कालसर्प यंत्र मुद्रिका 5.कालसर्प यंत्र पिरामिड (यंत्र, पैंडल व मुद्रिका स्वर्ण, चांदी, ताम्र में उपलब्ध)

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

सामग्री प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org